समानता से होता परमात्म मिलन...

मेला तो सबने देखा ही होगा, लेकिन ऐसा विहंगम मेले का दृश्य देखने के बाद, जो सुकून मिलता है, जो मन गद्‌गद् होता, वैसा परिदृश्य आज तक हमारे सामने नहीं आ पाया। मन तड़प जाता है, जब मनाने वाला, सुकून देने वाला, जाने वाला होता है। उसे बस देखते रहने का भाव सामने रखते हुए हम चाहते हैं, वो यहीं रह जाये, उसे देखते हुए कर्म करते रहें। अभी तक हमारी नज़रें पूरी तरह से पवित्र हो गई हैं और आने वाले समय में बहुतों की होंगी, ऐसी आशा हम सभी के प्रति रखते हैं। उसे देखकर, उसे आँखों से छूकर, बस चित्त में वही रहे, वही रहे, वही रहे... ये दृश्य सिर्फ अरावली श्रृंखला में स्थित आबू पर्वत पर ही देखने को मिलता है।

'हमने देखा, हमने पाया शिव भोला भगवान...', ये बात कइयों के लिए कल्पनाओं से परे होंगी। परंतु हमने यह हकीकत में देखा परमात्मा से मिलन मनाते हुए लाखों आत्माओं को। ये आपके लिए आश्चर्य तो होगा ही, लेकिन हमने ये देखा अपनी नज़रों से। अब वे कैसे मना रहे थे मिलन, ये तो एक अनोखी ही विधि है। क्योंकि परमात्मा निराकार है, और निराकार परमात्मा से मिलन मनाना, अर्थात् उन जैसा हमें भी निराकार होना पड़े। क्योंकि कहा जाता है कि समानता से मिलन होता है। जैसे कहा जाता है, 'जैसा बाप वैसा बेटा', तो हमारे पिता परमात्मा शिव का रूप ज्योतिर्बिन्दु निराकार, तो हमारा भी रूप ज्योतिस्वरूप ही होगा ना! ज्योत से ज्योत जलेगी ना! और अज्ञान अंधियारा मिटेगा। जब किसी का बच्चा विदेश में पढ़ता है, तो उसके पिता को जब अपने बच्चे से मिलना होता है तो वो किस चीज़ का सहारा लेता है, वायरलेस कनेक्शन या 'बेतार का तार'। इसका मतलब है कि किसी से भी अगर हमको स्थूल में भी बात करनी हो तो उसके लिए भी हमें थोड़ा सूक्ष्म बनना पड़ता है। वैसे ही यदि परमात्मा से मिलन मनाना है या सम्बन्ध जोड़ना है तो, हमें भी अपने मन के तार को उसके साथ जोड़ना होगा।

वास्तव में देखा जाए तो मनुष्य का सीधा तारतम्य 'मन' से है। मन ही तो मिलन मनायेगा ना! ऐसा ही सुंदर मिलन हमने देखा भी, मनाया भी, और मनाते हुए अनेक जिज्ञासुओं को देखा। इस मिलन में और कुछ नहीं, सिर्फ मन और दिल से ही ये मिलन मनाया जाता है। जब मन को वास्तव में जो चाहिए था वो मिल जाता, तब वो सुकून महसूस करता है, और खुशियों में झूम उठता है। तब गीत गाने लगता, 'पाना था सो पा लिया, अब ना रहा कुछ बाकी...' ये हमने अपनी आँखों से देखा व सुकून

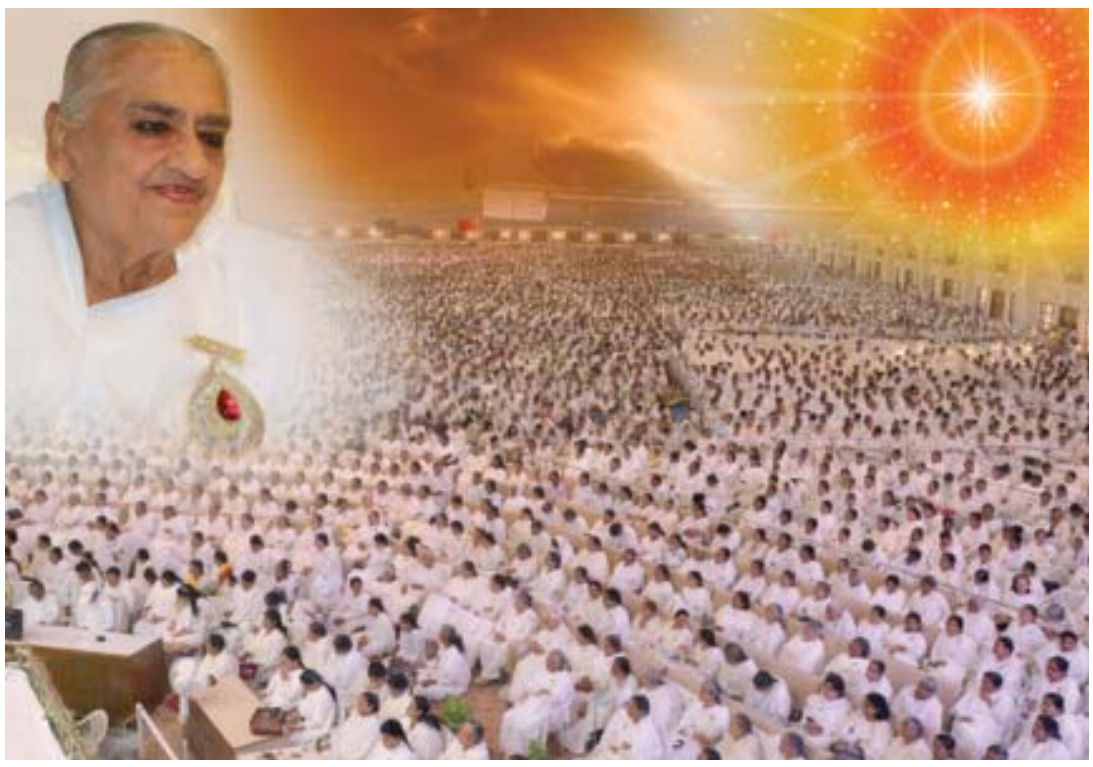

पाया। ये ऐसा सुंदर अलौकिक मिलन इस धरा पर हो रहा है। तो आपका मन उनके मिलन के लिये लालायित नहीं है! आखिर वो आपका भी तो पिता है ना! जिसे पाने के लिए ही तो आप उसे पूजते रहे, पुकारते रहे, पहाड़ों-कन्दराओं में ढूंढ़ते रहे। तो आइये, आपको हम बताते हैं उनकी मिलन भूमि के बारे में। ऐसे सुंदर मिलन की धरनी आबू अरावली पर्वत है, जहाँ उस अलौकिक मिलन की महफिल लगती रहती है। तो अब देर किस बात की! आयें और इस महफिल में शामिल हो जायें और अपने उस प्राण प्राणेश्वर के सच्चे आशिक बनकर उसको अपने दिल में बसा लें और उससे मिलन का आनंद लें।

सत्यम् शिवम् सुंदरम् का गीत बज रहा चहुँ ओर

जब कोई अपना अरसों से बिछड़ा हुआ साथी हमसे मिलने आता है, तो हम खुशी से फूले नहीं समाते! राह में उसके लिए अरमानों के पुष्प लिए बैठे होते। वैसी ही कुछ स्थिति उस परम् प्रियतम् की भी है, जो अपनी सारी खुशियाँ बांटने हमारे दर पर खड़ा है। बस थोड़े अलसाए नैनों को खोल कर उसे देखो - आप भी अपने को जीवंत अनुभव करेंगे। तो जागो और पहचानो उस परम प्रियतम् को ।

सत्यम् शिवम् सुंदरम् का गीत सभी बड़े चाव से गाते हैं। उस गीत की लाइन आते ही मन में प्रसन्नता की एक लहर दौड़ जाती है। प्रसन्न हों भी क्यों ना! क्योंकि हमारे मन का तार और अंतर्रात्मा की चाह उस सत्यम् शिवम् सुंदरम् परमात्मा पर एकाग्र होने से खुशी एवं सुकून का अनुभव होने लगता है। न जाने हमने खुशियाँ प्राप्त करने के लिए जीवन में कितने हथकंडे अपनाए हैं कि कहीं खुशी की झलक हमारे जीवन में मिल जाए। लेकिन आज इस शिव जयन्ति के अवसर पर आपको खुशियों की प्राप्ति कराने हेतु विधि बताते हुए हमें अति हर्ष हो रहा है कि स्वयं खुशियों का दाता, वो प्राणेश्वर, परमेश्वर, परमपिता हमारी खाली झोली को खुशियों से भरने की राह दिखा रहे हैं। हमें तो अक्ल भी नहीं थी कि खुशियाँ कैसे मिलेंगी! क्योंकि हम तो दर-दर भटकते रहे, तेरे मेरे में, वस्तु-वैभव, पदार्थों में खुशी ढूढ़ने की कोशिश की। लेकिन जितना

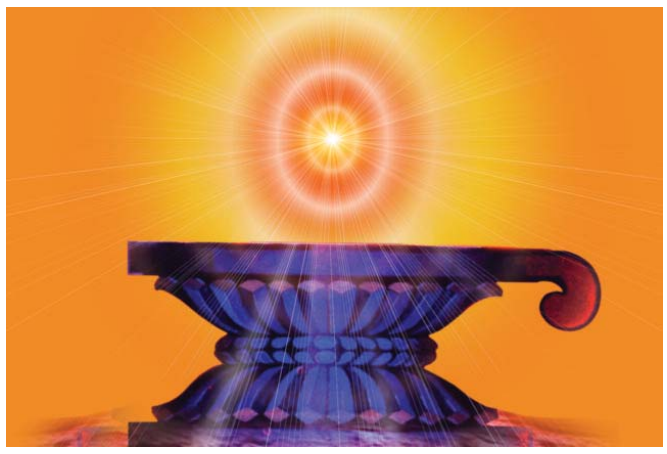

ढूंढ़ा उतने ही दूर होते गए। जबकि अब परमात्मा शिव ने आकर ये बताया कि हे मेरे लाडले बच्चों! खुशियाँ तो आपके पास ही हैं, लेकिन उसको कैसे अर्जित करना है, ये मैं आपको बताता हूँ। सिर्फ आप अपने आपको देखो, आपका और मेरा नाता कैसा है! कहेंगे ना, पिता और पुत्र का। तब भला आप कैसे नाखुश रह सकते हैं! बस, इतना ही करना है, मुझसे सम्बन्ध जोड़ो और अपनी वास्तविकता में स्थिर हो जाओ। देखो, आप कौन हो, किसके हो, और हमारा जो ये सम्बंध है, ये तो खुशियों भरा ही है ना! मैं खुशियों का भंडार, और मेरे बच्चे उससे कैसे वंचित रह सकते हैं! जो मेरी जायदाद सो आपकी जायदाद, तब भला आप इस खुशी से कैसे दूर रह सकते हैं! आओ, शिवरात्रि के इस शुभ अवसर पर अज्ञान अंधकार के बादल को हटाएं और अपने आप से भी प्यार करें, अपनी शक्तियों को पहचानें और मुझ शक्तियों के सागर के साथ नाता जोड़ खुशियों के झूले में झूलें। यही तो सच्चे अर्थ में शिवरात्रि मनाना है। तो ऐसी शिवरात्रि मनाकर अपनी झोली खुशियों से भरेंगे ना! आप ही तो गाते थे ना 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्', तो उस गीत के भावार्थ को सार्थक करेंगे ना!

तो आओ बढ़ायें एक कदम शिव पिता की ओर।

तब दिखेगी जीवन में एक स्वर्णिम सुनहरी भोर।।